e-ISSN: 2319-8753 | p-ISSN: 2347-6710

IJIRSET
International Journal of Innovative Research in
SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

INTERNATIONAL JOURNAL OF INNOVATIVE RESEARCH

IN SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

Volume 13, Issue 8, August 2024

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

Impact Factor: 8.524

9940 572 462   6381 907 438   ijirset@gmail.com   www.ijirset.com

International Journal of Innovative Research of Science, Engineering and Technology (IJIRSET)

Impact Factor 8.524

|www.ijirset.com |A Monthly, Peer Reviewed & Referred Journal| e-ISSN: 2319-8753; p-ISSN: 2347-6710|

Volume 13, Issue 8, August 2024

|DOI: 10.15680/IJIRSET.2024.1308178|

हिन्दी कथा साहित्य में प्रवासी कथाकारों का योगदान – एक मूल्यांकन

राजेश कुमार मीना

सहायक आचार्य, (हिन्दी)

श्री डूंगरगढ़ महाविद्यालय, श्री डूंगरगढ़

सारांश

हिन्दी कथा साहित्य की जड़ें, एक विशाल वटवृक्ष के समान सुदूरवर्ती सीमा तक फैली हुई हैं। जिसने हिन्दी में न केवल कई नए साहित्यिक विमर्श को जन्म दिया है, वरन् उन्हें अपने विशाल अनुभव से सिंचित कर, उनका रूप गढ़ने में अद्वितीय भूमिका भी निभाई है। हिन्दी साहित्य लेखन के क्षेत्र में प्रवासी लेखकों के वर्चस्व में निरन्तर वृद्धि होती जा रही है। जिसके परिणामस्वरूप प्रवासी हिन्दी साहित्य के रूप में एक नए साहित्यिक विमर्शो का आगमन हिन्दी कथा–साहित्य के क्षेत्र में देखने को मिलता है। यह आज के नवयुग का विमर्श है, क्योंकि प्रवसन की प्रक्रिया चौतरफा विश्व में घटित हो रही है। प्रवासी हिन्दी साहित्य ने अंतर्राष्ट्रीय फलक पर हिन्दी भाषा के मान–प्रतिष्ठा में अभूतपूर्व वृद्धि की है, जिससे हिन्दी भाषा में रचित साहित्य विश्व में अपनी उपस्थिति दर्ज कराने में सफल हुआ है। वैश्वीकरण के इस दौर में, लोगों का एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाना एक आम बात हो गई है। इस प्रक्रिया में, कई भारतीय भी विदेशों में जाकर बस गए हैं, और उन्होंने वहां रहकर अपने अनुभवों और भावनाओं को साहित्य के माध्यम से व्यक्त किया है। इस प्रकार, प्रवासी साहित्य का उदय हुआ है, जो उन रचनाओं को संदर्भित करता है जो विदेशों में रहने वाले भारतीय लेखकों द्वारा लिखी गई हैं। प्रवासी साहित्य ने भारतीय संस्कृति और मूल्यों को विदेशों में बढ़ावा दिया है, और साथ ही, इसने विदेशी संस्कृतियों और अनुभवों को भारतीय पाठकों तक पहुंचाया है। प्रवासी साहित्य में, लेखकों ने अपनी पहचान और अस्मिता की खोज को महत्वपूर्ण रूप से दर्शाया है। उन्होंने अपनी जड़ों से जुड़े रहने की इच्छा, और एक नई संस्कृति में समायोजित होने की चुनौतियों का वर्णन किया है। प्रवासी साहित्य ने हिंदी साहित्य को एक नया दृष्टिकोण प्रदान किया है, जिसमें विभिन्न संस्कृतियों, भाषाओं, और जीवन शैलियों का समावेश है। प्रस्तुत शोध पत्र में हिन्दी कथा साहित्य में प्रवासी कथाकारों के योगदान एवं उनके दर्शन के महत्त्व को दर्शाने का प्रयास किया गया है।

मूल शब्द : हिन्दी कथा साहित्य, साहित्यिक विमर्श, प्रवासी साहित्य, नया दृष्टिकोण

Volume 13, Issue 8, August 2024
|DOI: 10.15680/IJIRSET.2024.1308178|

प्रस्तावना :

इक्कीसवीं सदी में हिन्दी भाषा के स्वरूप में जो लचीलापन दृष्टिगत होता है, वहीं इस भाषा को वैश्विक भाषा के रूप ढालने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। 21वीं सदी में 'हिन्दी', विश्व भाषा, संचार माध्यम की भाषा, ऑडियो, वीडियो, दृश्य मीडिया, सिनेमा, समाचार, रेडियो की भाषा के रूप में हमारे सामने है। हिन्दी में उर्दू–फारसी, अरबी, संस्कृत, अंग्रेजी तथा अन्य भाषाओं के शब्द भी शामिल हैं। अन्य भाषाओं के साथ हिन्दी का यही अपनापन उसे विश्व भाषा बनाता है। श्री अटल बिहारी बाजपेयी के शब्दों में–

"गूँजी हिन्दी विश्व में, स्वप्न हुआ साकार।

राष्ट्रसंघ के संघ में, हिन्दी की जयकार।।"

अमेरिका, कनाडा, ब्रिटेन, डेनमार्क, सूरीनाम, गुयाना, मोरिशश जैसे अनेक देशों में प्रवासी भारतीय अनवरत रूप से हिन्दी साहित्य के सृजन एवं विकास कार्य में लगे हुए हैं। इनमें दूतावास के अधिकारी तथा विदेशी विश्वविद्यालय के प्राध्यापक तो हैं, अनेक सामान्य जन भी हैं जो नियमित लेखन और अध्यापन से विदेशों में हिन्दी साहित्य को विस्तार देने और लोकप्रिय बनाने में लगे हुए हैं। विश्व के विकसित देशों में रचे जा रहे हिन्दी के प्रवासी साहित्य के अन्तर्गत नार्वे, नीदरलैण्ड, डेनमार्क, कुवैत, बर्मिंघम आदि देशो का समावेश होता है। अमेरिका और इंग्लैण्ड में मॉरीशस के बाद सबसे अधिक प्रवासी साहित्य की रचना हुई है। इंग्लैण्ड में डॉ. लक्ष्मीमल्ल सिंघवी के उच्चायुक्त होने पर हिन्दी में साहित्य रचना का आन्दोलन शुरू हुआ, जिसके परिणाम स्वरूप वहाँ कई हिन्दी संस्थाओं की स्थापना हुई, साहित्यिक कृतियों का प्रकाशन हुआ, कार्यक्रम हुए एवं विश्व हिन्दी सम्मेलन हुआ। जिससे हिन्दी भाषा के प्रचार–प्रसार को बल मिला। वर्तमान में विदेशो में रहने वाली महिला रचनाकारों की भूमिका प्रवासी हिन्दी साहित्य के विस्तार में महत्त्वपूर्ण रही हैं। उनकी साहित्यिक कृतियाँ विषय वस्तु की दृष्टि से सर्वथा नवीनता और मौलिकता का परिचय देती हैं और वैविक हिन्दी साहित्य लेखन के क्षेत्र में महिलाओं की अहम् भागीदारी सुनिश्चित करती है।

उदेश्य –

प्रस्तुत शोध–पत्र के निम्नलिखित उद्देश्य है–

- हिन्दी कथा साहित्य का विश्लेषण करना
- हिन्दी कथा साहित्य में प्रवास की प्रवृति का आंकलन करना
- हिन्दी कथा साहित्य मे प्रावासी कथाकारों के योगदान का मूल्यांकन करना

International Journal of Innovative Research of Science, Engineering and Technology (IJIRSET)

Impact Factor 8.524

|www.ijirset.com |A Monthly, Peer Reviewed & Referred Journal| e-ISSN: 2319-8753; p-ISSN: 2347-6710|

Volume 13, Issue 8, August 2024

|DOI: 10.15680/IJIRSET.2024.1308178|

प्रवास – अर्थ एवं संकल्पना :

प्रवास की संकल्पना अत्यन्त प्राचीन है। पृथ्वी पर जीवनरूपी बीज के अंकुरण के साथ ही प्रवास की प्रक्रिया का आविर्भाव हुआ। सूक्ष्म जीव–जन्तुओं से लेकर विशालकाय जीवधारियों तक जलवायु परिवर्तन से प्रभावित होकर प्रवास करते रहे हैं। मानव भी इस प्रक्रिया से अछूता नहीं रहा है। आदिकाल से ही मानव की घुमन्तू प्रवृत्ति उसे बेहतर जीवन परिस्थितियों की तलाश में दूरवर्ती क्षेत्रों में पलायन के लिए प्रेरित करती रही है। पलायन आकस्मिक तथा अनिवार्य रूप में मानव जीवन का अभिन्न अंग बन गया। सदी की शुरूआत में महामारी, जलवायु परिवर्तन, युद्ध आदि अनेक ऐसी परिस्थितियाँ उपजी जिसने मानव प्रजाति को अस्तित्व की रक्षा के लिए प्रवास को अनिवार्य बना दिया।

प्रवास एक स्वाभाविक तथा नैसर्गिक प्रक्रिया है। प्रवास की व्यापक संकल्पना का सम्बन्ध मानव से लेकर पशु–पक्षियों तक रहा है। 'प्रवास' शब्द प्र+वास से मिलकर बना है। 'वास' शब्द 'वस' धातु से अस्तित्व में आया, जिसका अर्थ है– बसना। वे व्यक्ति जो सदियों से अपनी जन्मभूमि पर वास कर रहे हैं, उनके लिए वासी शब्द का प्रयोग किया जाता है, किन्तु वास में प्र उपसर्ग जुड़ जाने से एक विशेष प्रकार के वासी का बोध होता है। संस्कृत हिन्दी कोश के अनुसार प्रवास का अर्थ है– विदेश गमन, विदेश यात्रा, घर पर न रहना, परदेस निवास तथा 'प्रवासी' का अर्थ है– 'यात्री', परदेशी अर्थात् एक देश से दूसरे देंश में बसना या रहना ही प्रवास है। प्रवास का सामान्य अर्थ अपने जन्मस्थान से दूरवर्ती क्षेत्रों में कुछ समय के लिए अथवा हमेश के लिए प्रस्थान करना, निवास करना अथवा यात्रा करना होता है। सामान्यतः एक देश की भौगोलिक सीमा में एक राज्य से अन्य किसी राज्य में जाना (किसी भी कारणवा) प्रवास कहलाता है। किन्तु वक्त के साथ प्रवास का अर्थ संकुचित होता गया। वर्तमान समय में प्रवास का सामान्य अर्थ विदेश गमन, विदेश, यात्रा अथवा परदेश में निवास से हो गया है। किसी देश की भौगोलिक, सामाजिक, राजनीतिक तथा आर्थिक परिधि से दूरस्थ अन्य देशों में निवास करना ही प्रवास का अर्थ हो गया।

प्रवासी हिन्दी साहित्य लेखन अवधारणा एवं स्वरूप :

प्रवासी हिन्दी साहित्य लेखन की संकल्पना का आविर्भाव भारतवंशियों तथा प्रवासी भारतीय जनमानस द्वारा किये जा रहे संवेदनात्मक रचनाशील लेखन से हुआ। हिन्दी भाषा एवं भारतीय संस्कृति को वैश्विक धरातल पर पहचान एवं ख्याति दिलाने में प्रवासी हिन्दी साहित्य लेखन की उल्लेखनीय भूमिका रही है। प्रवासी हिन्दी साहित्य की सात्त शाखा के रूप में प्रवासी हिन्दी साहित्य अपनी रचनाधर्मिता से हिन्दी साहित्य को सघन बनाने के साथ–साथ पाठक वर्ग को प्रवास की संस्कृति, संस्कार एवं इस भूभाग से जुड़े लोगों की स्थिति से अवगत कराने का कार्य कर रहा है।

मर्यादा पत्रिका के जनवरी, 1922 के प्रवासी अंक से हिन्दी और हिन्दुस्तानियों की दुनिया में इस शब्द ने अपनी नींव रखी और अतिथि संपादक श्री बनारसी दास चतुर्वेदी जी द्वारा वैश्विक आह्वान किया गया। चाँद पत्रिका जनवरी, 1926 में प्रवासी अंक प्रकाणित किया गया, जिसके मॉरीशस के प्रवासी मजदूरों के यातनामय जीवन पर प्रेमचन्द की कहानी शूद्रा प्रकाशित हुई, जो भारत में प्रवासियों पर लिखी गई हिन्दी की प्रथम कहानी थी।

पं. बनारसी दास चतुर्वेदी प्रवासी के प्रथम प्रायीकता एवं उन्नायक थे। उन्होंने फिजी में रहने वाले प्रवासी भारतीय मजदूरों की समस्याओं को केन्द्र में रखकर फिजी में इक्कीस पर्व (1914) फिजी में भारतीय (1918), प्रवासी भारतीय नामक पुस्तकों की रचना की। देश के आजाद होने के बाद लक्ष्मी सिंधी जब लोकसभा के सदस्य बने तो उन्हीने प्रवासी भारतीयों के लिए भारतयती शब्द का प्रयोग किया और उन्हें भारत का अंग घोषित किया भारतवासियों की हिन्दी रचनाओं का पहला संकलन 2003 में विश्व हिन्दी रचना शीर्षक पत्रिका में डॉ. कमल किशोर गोयनका जी के संपादन में प्रकाशित हुआ। इस तरह पहली बार भाषा और समाज के भीतर प्रवासी संस्कृति का वैश्विक स्तर पर शंखनाद हुआ। विदेशी भूमि पर वास कर रहे प्रवासी भारतीय साहित्य सेवार्थियों द्वारा रचे जा रहे साहित्य की दो धाराएँ प्रवाहित है प्रथम है प्रवासी भारतवंशी साहित्य तथा द्वितीय है– प्रवासी भारतीय साहित्य। प्रथम धारा के अंतर्गत गिरमिटिया मजदूरी के वंशजों द्वारा सृजित साहित्य को स्थान दिया जाता है, जो वर्षों पूर्व जलमान द्वारा एग्रीमेंट के तहत मौरीस गुयाना, फिजी, टोबैगो, टिनियाद, सुरीनाम आदि देशों में पहुंचे तथा वापस भारत लौटकर न आ सके उन्होंने मजबूरीवश वही अपने जीवन की शुरुआत की। विदेशों में उन अनजान लोगों के बीच अजनबी परिवेश में इन गिरमिटिया मजदूर भाईयों ने रामचरितमानस, भगवद्गीता, सत्यनारायण कथा हनुमान चालीसा आदि धार्मिक ग्रन्थों के अनुसरण के द्वारा न केवल अपनी लोकसंस्कृति, धर्म तथा अपने वजूद की रक्षा की वरन् कालांतर में प्रवासी भारतवंशी साहित्य की नींव निर्माण का कार्य भी किया। भारतवंशियों द्वारा रचे जा रहे, प्रवासी साहित्य का रंग–रूप, मिजाज और स्वरूप प्रवासी भारतीयों द्वारा रचे जा रहे साहित्य से संवेदना के स्तर पर भिन्न है। अभिमन्यु अनत, सुचिता रामदीन, मॉरीस के राष्ट्रकवि ब्रजेन्द्र कुमार भगत मधुकर, राम अवतार गुप्त प्रमुख भारतवंशी साहित्यकारों में गिने जा सकते हैं।

द्वितीय धारा के अन्तर्गत उन प्रवासी साहित्यकारों द्वारा लिखे जा रहे साहित्य को रखा जा सकता है, जिन्होंने 20वीं सदी के आखिरी दशक में वायुयान के माध्यम से जीविकोपार्जन, उच्च गिक्षा अथवा उच्चतम जीवन स्तर तथा अथाह भौतिक सुख–सुविधाओं के व्यामोह में विदेशों में प्रस्थान किया तथा बाद के वर्षों में स्थायी रूप से वहीं बस गए। इन प्रवासी साहित्यकारों ने प्रवासी जीवन की समस्त कठिनाईयों को बखूबी अपने लेखन में उतारा है। उषा प्रियंवदा, सोमा वीरा, दिव्या माथुर, गौतम सचदेवा, उषा राजे सक्सेना, सुधा ऑम ढींगरा आदि अनेक प्रवासी हिन्दी साहित्यकार विश्व के अनेक देशों में अनवरत रूप से रचनाकार्य में संलग्न हैं। इनके सृजनरत

International Journal of Innovative Research of Science, Engineering and Technology (IJIRSET)
Impact Factor 8.524
|www.ijirset.com |A Monthly, Peer Reviewed & Referred Journal| e-ISSN: 2319-8753; p-ISSN: 2347-6710|
Volume 13, Issue 8, August 2024
|DOI: 10.15680/IJIRSET.2024.1308178|

हिन्दी साहित्य में न केवल विषय वैविध्य के दर्शन होते हैं वरन् समन्यवादी प्रवृत्ति परिलक्षित होती है जो सम्पूर्ण विश्व को एकता के सूत्र में बाँध कर बसुधैव कुटुंबकमश्की धारणा को पुख्ता करती है। वह लेखक संस्कृतियों को निकट लाकर समन्वयवादी प्रवृत्तियों को प्रोत्साहन दे सकता है। आर्थिक जगत में वैश्वीकरण की धारणा जिस प्रकार फलीभूत हो रहो है और विश्व गाँव का स्वप्न देखा जा रहा है तथा सूचना क्रांति इस स्वप्न को साकार करती दिखाई पड़ रही है।

वर्तमान परिदृश्य

वर्तमान युग में प्रवासी हिन्दी साहित्य, मुख्यधारा के हिन्दी साहित्य में अपनी जगह बनाने तथा विशिष्ट पहचान हासिल करने में सफल हो रहा है। समय के साथ प्रवासी हिन्दी साहित्य लेखन का स्वरूप भी परिवर्तित हो रहा है। वस्तुतः प्रवासी साहित्य के मूल में विस्थापन की पीड़ा है। प्रवासी साहित्य ने हिन्दी में मनोवैज्ञानिक और सांस्कृतिक द्वन्द्व का जो अनुभव दिया है, एक ही समय में घर से दूर होने का दर्द और घर से दूर होने की जरूरत वह हमारी भाषा की एक बड़ी रचनात्मक पूंजी है। तेजेन्द्र शर्मा की कहानी 'पासपोर्ट का रंग' के दो रंग इसी दोहरेपन की प्रतिनिधि है। फणीवेश्वर नाथ रेणु 'आवास' के रचनाकार थे। निर्मल वर्मा 'प्रवास' के 'मुझे आश्चर्य हैं कि' कमल किशोर गोयनका का 'हिन्दी का प्रवासी साहित्य' इस शीर्षक से लिखे अपने बहुत लम्बे निबन्ध में निर्मल वर्मा का कोई जिक्र नहीं करते। हाँ यह अवश्य है कि निर्मल वर्मा यूलियस की तरह थे जो दुनिया भर में प्रवास करने के बाद घर लौट आए थे। लेकिन गोयनका जी पं. तोताराम सनाढ्य का उल्लेख करते हैं, जो फिजी में इक्कीस वर्ष रहकर लौट आए थे। आज के बहुत हिन्दी प्रवासी साहित्यकार रिनैसा युग के आदर्श पैट्रार्क की तरह है जो कभी घर नहीं लौटा, निर्वासित ही रहा।

निष्कर्ष :

उक्त विश्लेषण से ज्ञात होता है कि प्रवासी कथाकारों ने हिंदी कथा साहित्य को एक नई दिशा दी है। उन्होंने अपनी कहानियों में प्रवासी जीवन के विभिन्न पहलुओं, जैसे कि सांस्कृतिक संघर्ष, भावनात्मक अलगाव, और नई पहचान की खोज को उजागर किया है। प्रवासी साहित्य का स्वरूप निरन्तर विस्तृत तथा परिवर्तित हो रहा है। वर्तमान समय में प्रवासी साहित्य की सीमाएं केवल प्रवासी जीवन की विषताओं तथा समस्याओं के चित्रण तक ही सीमित नहीं है वरन् प्रवासित देश की संस्कृति, वहाँ का पर्यावरण, सामाजिक परिवेश, लोगों की चिन्तन शैली, जीवनगत विशेषताएँ, रीति–रिवाज, आधुनिक तथा विकसित टेक्नोलॉजी आदि विभिन्न दाशाओं तथा परिस्थितियों का न्यायोचित विशलेषण भी प्रवासी हिन्दी साहित्य के नवीन तथा रचनात्मक लेखन के अभिन्न अंग के रूप में दृष्टिगोचर होते हैं।

संदर्भ सूची :

1. वर्मा, हरिश्चंद्र (2004), प्रवासी साहित्य, सिद्धांत और मूल्यांकन, अनामिका प्रकाशन, नई दिल्ली।
2. गोयनका, कमल किशोर (2005), प्रवासी साहित्य– एक विमर्श, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
3. त्रिपाठी, सूर्य कान्त (2006), प्रवासी साहित्य, संदर्भ और विश्लेषण, विश्वविद्यालय प्रकाशन, नई दिल्ली।
4. राय, रमाकांत (2007), प्रवासी साहित्य, बदलते परिदृश्य, कनिष्क प्रकाशन, नई दिल्ली।
5. जैन, निर्मला (2008), प्रवासी साहित्य, पहचान और अस्मिता, ओरिएंट ब्लैकस्वान, नई दिल्ली।
6. सिंह, विजय बहादुर (2009), प्रवासी साहित्य, विविध आयाम, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
7. अवस्थी, पुष्पा (2010), प्रवासी साहित्य, संवेदना और सरोकार, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली।
8. सिंह, शैलजा (2011), प्रवासी साहित्य, अनुकंपा और अनुभूति, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली।
9. कुमार, कृष्णा (2012), प्रवासी साहित्य, वैश्विक परिप्रेक्ष्य, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली।
10. शर्मा, ओम प्रकाश (2015), प्रवासी साहित्य, नई दिशाएँ, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली।

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

INNO SPACE
SJIF Scientific Journal Impact Factor

doi crossref

निस्केयर NISCAIR

INTERNATIONAL JOURNAL OF INNOVATIVE RESEARCH

IN SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

9940 572 462 6381 907 438 ijirset@gmail.com

Scan to save the contact details